

ISSN No. (E) 2455 - 0817

ISSN No. (P) 2394 - 0344

RNI : UPBIL/2016/67980

Monthly / Bi-lingual

VOL-4* ISSUE-1* (Part-1) April- 2019

Multi-disciplinary International Journal

Remarking

An Analisation

Peer Reviewed / Refereed Journal

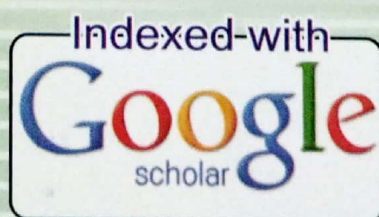


Impact Factor (2015)

GIF = 0.543

Impact Factor (2018)

IJIF = 6.134



Impact Factor (2018)

SJIF = 6.11

Editorial Board for the Remarking An Analisation

April- (Part-1)2019

Executive Board

PATRON	EDITOR-IN-CHIEF	MANAGING EDITOR
Dr. M.D. Pathak Chairman , Centre for Research & Development of Waste & Marginal Land Ex. Director General , U.P. Council of Agriculture Research, U.P. Ex. Director , Research and Training, International Rice Research Institute, Manila, Philipines pathakmd1@gmail.com	Dr. Asha Tripathi Senior Vice-President , Social Research Foundation, Kanpur asha23346@gmail.com	Dr. Rajeev Mishra Secretary , S R F, Kanpur indra.rajeev@gmail.com shrinkhala2014@gmail.com 128/170 H' Block, Kidwai Nagar, Kanpur

EDITORIAL-ADVISORY BOARD

Political Science and International Relation	Sociology and Social Anthropology	Library & Information Science
Prof. Vandana Asthana Eastern Washington University, Cheney, WA	Dr. K. Bharathi Arba Minch University, Arba Minch, Ethiopia, North Africa	Dr. U. C. Shukla Fiji National University, Lautoka, Fiji

Botany		
Dr. RK.S. Rathore Associate Professor & HOD (Rtd.) R.B.S. College, Agra, U.P., India	Dr. Varsh Awasthy Assistant Professor, N.E.S. Science College, Jabalpur, India M.p., India	Dr. Achleshwar Bohra Retd. Dean, Director, (Faculty of Science) Mahila Mahavidhyalya, Jodhpur, Rajasthan, India

AIBAS	Agricultural Extension & Communication	Physics
Dr. Neerja Pandey Associate Professor, Amity University of Lucknow, Lucknow, U.P., India	Prof. J.P. Shrivastva Former Professor, SHUATS, Prayagraj, U.P., India	Shubham Mishra Researcher, Institute of Science, BHU, India

Law		
Dr. Rana Parveen Principal, Hashmi College of Law, Amroha, India	Arvind Jasrotia Director, University of the Law, Jammu & Kashmir	Dr. Geeta Joshi Professor, Punjab University, Patiala, India
Dr. Avdhesh Pratap Associate Professor, BDS School of Law, CCS University, Meerut, India	Sonal Khare Assistant Professor, C.M.P. Degree College, Allahabad, India	

English		
Kusum Babu Gaur Head, DBPG College, Bachhrawan, RBL, India	Dr. Vinay Maltora Assistant Professor, K.N. Govt. P.G. College, Gyanpur, India	Dr. Ranjana Tripathi Principal Rajahri Tandon Mahila Mahavidyalya, Prayagraj, India
Dr. Anupama Kaushal Lecturer, Govt. College, Tonk, Rajasthan, India	Dr. Gurpreet Kaur Assistant Professor, SGPT Khalsa College, Anandpur Sahib, Punjab, India	

Contents

S. No.	Particulars	Subject	Page No.	
			From	To
1	समावेशी शिक्षा सहायक तकनीकी व कौशल : अनुस्थिति और चलिष्णुता का प्रशिक्षण एवं महत्व अंश कुमार दास एवं सारिका शर्मा, महेन्द्रगढ़, हरियाणा, भारत	शिक्षा	H-01	H-05
2	भारतवर्ष में पब्लिक स्कूल परीक्षा के विकास की ऐतिहासिक दृष्टि कृष्ण चन्द गौड़, अनूप शहर, बुलन्दशहर, उ०प्र०, भारत	शिक्षा	H-06	H-07
3	मूक बधिर बालिकाओं पर योग व्यायाम व खेल के प्रभाव का अध्ययन (बिलासपुर जिले में स्थित मूक बधिर विद्यालय के संदर्भ पर आधारित अध्ययन) नमिता शर्मा, एवं प्रिंस कुमार उपाध्याय, बिलासपुर (छ.ग.), भारत	अर्थशास्त्र	H-08	H-14
4	राजस्थान के पूर्वी भाग में प्रचलित जनजातीय लोक गायन शैलियाँ अनीता मीणा, एव रौशन भारती, कोटा, राजस्थान, भारत	संगीत	H-15	H-17
5	हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की गायन विधा ख्याल : एक अवलोकन श्वेता खरे, प्रयागराज, उ० प्र०, भारत	संगीत	H-18	H-21
6	अलवर संग्रहालय में संग्रहित अभिलेखों में वर्णित सांस्कृतिक विरासत एवं निरन्तरता रुचिका सैनी, अलवर, राजस्थान, भारत	इतिहास	H-22	H-27
7	भारतीय नारी की स्वतंत्रता और शिक्षा श्वेता सिंह, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत	राजनीति विज्ञान	H-28	H-32
8	वैदिक संस्कृत के भाषा-व्याकरण पर एक दृष्टि कौमुदी श्रीवास्तव, प्रयागराज, उ०प्र०, भारत	संस्कृत	H-33	H-37
9	कर्मभूमि और 'गोदान' में चित्रित वर्ग-संघर्ष पूनम काजल, जींद, राजस्थान, भारत	हिन्दी	H-38	H-40
10	गौतम बुद्ध और उनकी वैज्ञानिकता कपिल कुमार गौतम, सागर, मध्य प्रदेश, भारत	हिन्दी	H-41	H-45
11	भूमंडलीकरण के दौर में हिन्दी चंदाबैन, सागर, मध्य प्रदेश, भारत	हिन्दी	H-46	H-49
12	भीष्म साहनी और नीलू नीलिमा नीलोफर मंजुला शर्मा, पश्चिम बंगाल, भारत	हिन्दी	H-50	H-52

भूमंडलीकरण के दौर में हिन्दी

सारांश

प्रकृति निरंतर गतिशील है और उसकी गतिशीलता का हिस्सा मनुष्य भी है। जब मनुष्य भूमंडलीकरण के दौर में प्रविष्ट हुआ तो उसकी गति की कोई सीमा शेष न रही। इसी असीमित परिवेश में हिंदी भाषा का भी क्षेत्र विस्तारित हो रहा है। विश्व की एक बहुत बड़ी जनसंख्या भारत में निवास करती है। जिसका बहुत बड़ा हिस्सा हिंदी भाषा का प्रयोग करता है। इसलिए हिंदी भाषा वैश्विक बाजार में एक प्रमुख भाषा के रूप में उभर रही है। बाजार दुनिया के आर्थिक तंत्र को निर्मित करता है और इसी आर्थिक तंत्र से दुनिया की सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक शक्तियां बल ग्रहण करती हैं। इस रूप में हिंदी भाषा विश्व के आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक इत्यादि पक्षों का निर्धारण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। भूमंडलीकरण से जहाँ एक ओर हिंदी भाषा के वैश्विक विस्तार का मार्ग निर्मित हुआ है। वहीं दूसरी ओर हिंदी भाषी क्षेत्र में विश्व की अन्य भाषाओं के प्रवेश द्वार भी खुल गए हैं। जिससे हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंगलिश का चलन बढ़ता जा रहा है। हिंदी में अन्य भाषाओं के शब्द इस प्रकार सम्मिलित हो चुके हैं जैसे वो मूलतः हिंदी भाषा के ही शब्द हों। जिसके कारण हिंदी साहित्य पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। हिंदी भाषा के साहित्यकार हिंदी भाषी क्षेत्र के स्थान पर अन्य समाज, संस्कृति और भाषा को अपने साहित्य में प्रचुर मात्रा में स्थान दे रहे हैं। जिसका विपरीत प्रभाव साहित्य के मूल चिंतन और आधार पर पड़ रहा है।

मुख्य शब्द : हिन्दी भाषा, भूमंडलीकरण, बाजारवाद, वैश्वीकरण, उपमोक्तावाद, उपनिवेशवाद।

प्रस्तावना

मानव के विचार-विनिमय और चिंतन-मनन का साधन भाषा है। सामान्यतः जिन सार्थक ध्वनियों के माध्यम से मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय करता है, उन सार्थक ध्वनियों के समष्टि स्वरूप को भाषा कहते हैं। "भाषा वह साधन है जिसके द्वारा एक प्राणी दूसरे प्राणी पर अपने विचार, भाव या इच्छा प्रकट करता है।" भाषाविद् भोलानाथ तिवारी के अनुसार "भाषा उच्चारण-अवयवों से उच्चरित मूलतः प्रायः यादृच्छिक (Arbitrary) ध्वनि-प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा किसी भाषा-समाज के लोग आपस में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।" भाषा सम्पूर्ण सृष्टि में समस्त जीवों के आपसी सम्प्रेषण और भावों की अभिव्यक्ति के लिए सर्वथा महत्वपूर्ण है। एडवर्ड डब्ल्यू सईद के अनुसार "प्रत्येक बुद्धिजीवी व्यक्ति का जन्म एक भाषा में हुआ होता है और वह अपने जीवन का बड़ा हिस्सा उसी भाषा में बिताता है, जो उसकी बौद्धिक गतिविधियों का प्रमुख माध्यम होती है।" किन्तु भाषा को अभिव्यक्ति का माध्यम मात्र नहीं माना जा सकता है। भाषा स्वयं में सामाजिक सद्भाव अथवा आपसी द्वेष का आधार भी तैयार करती है। किसी भाषा विशेष का प्रयोग करने वाले लोगों को एक वर्ग विशेष के रूप में चिन्हित किया जाने लगता है। इस प्रकार सामाजिक व्यवस्था के निर्माण में भाषा भी अपनी भूमिका सुनिश्चित करती है। भाषा किसी की व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं होती है, वह तो एक सामाजिक निधि है। इसलिए सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक परिवर्तनों का प्रभाव सामान्यतः भाषा को भी प्रभावित करता है। कुछ परिवर्तनों के साथ भाषा में नवीनता एवं आधुनिकता आती है, जिसके कारण भाषा समाज के समकालीन सन्दर्भों को अभिव्यक्त करने में सक्षम होती है। किन्तु कुछ आपेक्षित परिवर्तनों को नगण्य रूप में ग्रहण करने पर और अनापेक्षित परिवर्तनों को अधिक ग्रहण करने पर भाषा के समक्ष भी कुछ चुनौतियां खड़ी हो जाती हैं।

पिछले कुछ दशकों में संचार एवं तकनीकी के विस्तार के कारण सम्पूर्ण विश्व में भौगोलिक दूरियों का महत्व नहीं रह गया है। जिसके प्रभाव से सम्पूर्ण विश्व एक गाँव के तुल्य माना जाने लगा है। इस प्रकार भूमंडलीकरण को



चंदाबैन

प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय
विश्वविद्यालय,
सागर, मध्य प्रदेश,
भारत

बढ़ावा मिल रहा है। भूमंडलीकरण अथवा वैश्वीकरण से आशय है— "विश्व के सभी राष्ट्रों, वहाँ के निवासियों, कम्पनियों आदि के मध्य जीवन के समस्त कार्य व्यापारों में पारस्परिक संवाद एवं आदान-प्रदान की प्रक्रिया। इस प्रक्रिया का सीधा सरोकार अंतराष्ट्रीय व्यापार, निवेश, सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि, उद्योग, पर्यावरण, संस्कृति, राजनीति, आर्थिक विकास, नागरिकों की समृद्धि, विभिन्न समुदायों की सामाजिक स्थिति और उनकी कल्याण-योजनाओं के साथ-साथ भाषा से भी है।⁴ भूमंडलीकरण शब्द विश्व के लिए नया हो सकता है, किन्तु भारतीय संस्कृति में वैश्वीकरण की परम्परा अति प्राचीन काल से देखने को मिलती है। आज संपूर्ण विश्व को विश्व ग्राम (ग्लोबलाइजेशन) की दृष्टि से देखा जाता है। हमारे यहाँ 'उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम्' (महोपनिषद— खण्ड-71-73) की परिकल्पना प्राचीन काल से ही चली आ रही है। भूमंडलीकरण की बढ़ती रफ्तार से विश्व बाजार मजबूत हो रहा है, साथ ही मनुष्य का जन-जीवन भी उससे सीधे-सीधे प्रभावित हो रहा है। भूमंडलीकरण ने बाजारवाद जैसी नवीन सैद्धांतिकी को जन्म दिया है। "बाजारवाद से ही उपभोक्तावाद को बढ़ावा मिला है। भूमंडलीकरण सीधा बाजारवाद से जुड़ा है। बाजार का सीधा सम्बन्ध भाषा से है। बाजार से ही भाषा के रूप बनते बिगड़ते और कालान्तर में स्थायी हो पाते हैं।⁵ भूमंडलीकरण के कारण वैश्विक बाजार का एकीकरण हुआ है। बाजारों के संदर्भ में राष्ट्र की सीमाएं खत्म हो गयी हैं। धुर विरोधी देश भी आपस में बड़े स्तर पर व्यापार कर रहे हैं। "बाजार संस्कृति के विकसित हो जाने से भाषा का बाजारीकरण हुआ है। बाजार में माल बेचने के लिए सरलीकृत एवं आम-फहम की टकसाली भाषा की जरूरत होती है।⁶ अब यह बात आश्चर्य करने योग्य नहीं रह गयी है कि किसी भी एक देश का उत्पाद विश्व के किसी भी क्षेत्र में आसानी से मिल रहा है। बाजार के विस्तार से भाषा का भी विस्तार हो रहा है। वर्तमान समय में हिन्दी जनमानस की भाषा होने के साथ-साथ बाजार की भाषा भी बन गयी है। हिन्दी का प्रयोग एक बड़ा उपभोक्ता वर्ग कर रहा है। वैश्विक स्तर पर उत्पादित उत्पादों के विज्ञापन और प्रचार-प्रसार के लिए भारत में हिन्दी भाषा का ही प्रयोग किया जाता है। देशी-विदेशी कंपनियों के द्वारा भारतीय बाजार में अपना उत्पाद लाने के लिए हिन्दी भाषा को ही चुना जा रहा है।

वर्तमान समय में भूमंडलीकरण के दौर में एक बहस देखने को मिलती है। कुछ विद्वान् मानते हैं कि भूमंडलीकरण और बाजारवाद के प्रभाव से हिन्दी का विस्तार हुआ है। किन्तु कुछ विद्वान् इस तर्क से असहमत नजर आते हैं। लेकिन वास्तविकता यही है कि भूमंडलीकरण का सीधा प्रभाव हिन्दी भाषा पर भी व्यापक रूप में पड़ा है। हिन्दी आज केवल भारत देश तक ही सीमित नहीं है। बल्कि आज हिन्दी का प्रयोग विश्व के लगभग सभी देशों में किया जा रहा है। हिन्दी आज विश्व बाजार की भाषा बन चुकी है। उदाहरण स्वरूप देख सकते हैं कि चीन, जापान और कोरिया जैसे देश जहाँ अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त किसी भाषा को अहमियत नहीं देते हैं, वहाँ भारत में अपना व्यापार बढ़ाने के लिए ये

ही देश हिन्दी का बड़े स्तर पर प्रयोग करते हुए नजर आते हैं। चीन में अंग्रेजी को हेय माना जाता है किन्तु भारत का विरोधी देश होने के बावजूद भी चीन के सभी उत्पादों का भारत में हिन्दी भाषा में ही प्रचार-प्रसार और व्यापार किया जाता है। व्यापार को और अधिक बढ़ने के उद्देश्य से चीन के कई बड़े विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा पढ़ाई भी जा रही है। चीन के लोग हिन्दी को सीख रहे हैं। इतना ही नहीं अभी हाल ही में अमेरिका जैसे देश ने भी एशियाई देशों की राष्ट्रभाषा सीखने हेतु अपने अकादमिक जगत को निर्देशित किया है, जिसमें हिन्दी को प्रमुख स्थान दिया गया है। अमेरिका के भी करीब 75 विश्वविद्यालयों में संस्कृत के साथ-साथ हिन्दी भाषा का भी अध्ययन किया जा रहा है। बराक ओबामा ने अपने कार्यकाल में हिन्दी भाषी लोगों को विशेष रूप से नौकरी देने का प्रयास किया। व्यापार विस्तार के उद्देश्य से विश्व में हिन्दी भाषा जानने समझने की होड़ मच गयी है। केवल भाषा समझने के साथ प्रारंभ हुई इस मुहिम में अब साहित्य का भी अध्ययन किया जाने लगा है। अमेरिका, चीन, इंग्लैंड, स्विट्जरलैंड, दक्षिण अफ्रीका, कनाडा और रूस जैसे देशों में हिन्दी साहित्य का अध्ययन किया जा रहा है और उन पर शोध कार्य भी हो रहे हैं। भारत के पड़ोसी देशों में भी हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन बड़े पैमाने पर देखने को मिलता है।⁷ इसमें कोई संदेह नहीं कि भाषा के विकास के लिए हर भाषा को अपनी खिड़कियाँ, दीवालें खुली रखनी चाहिए। जिससे नई सामग्री आ सके और भूमंडलीकरण के इस दौर में हम बाहर से नई-नई चीजें ग्रहण कर सकें।⁸ भूमंडलीकरण के प्रभाव से हिन्दी का विस्तार अन्य देशों में तो हुआ ही है, साथ ही भारत के भी गैर हिन्दी भाषी क्षेत्रों में भी हिन्दी की दशा में कुछ सुधार आया है। दक्षिण भारत में जहाँ हिन्दी के साथ सौतेला व्यवहार किया जाता था। वहीं वर्तमान समय में तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल जैसे राज्यों के विश्वविद्यालयों में भी हिन्दी भाषा एवं साहित्य पर शोध कार्य किए जा रहे हैं। इतना ही नहीं तेलगु, तमिल, कन्नड़ तथा मलयाली साहित्य का बड़ी तेजी से हिन्दी में अनुवाद भी हो रहा है।⁹ वैश्वीकरण और बाजारवाद के कारण समकालीन भारतीय साहित्य अनुवाद के माध्यम से एक दूसरे के बहुत करीब आए। इसी नजदीकी के परिणामस्वरूप भारतीय साहित्य में कुछ नई प्रवृत्तियाँ उभरने लगीं, जिनमें स्त्री आन्दोलन सम्बन्धी विमर्श एवं दलित आन्दोलन सम्बन्धी विमर्श प्रमुख हैं।¹⁰

विश्व हिन्दी सम्मेलनों के माध्यम से दुनिया भर के हिन्दी भाषियों को एक मंच पर आने का मौका मिला। सन 1975 में प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन नागपुर में हुआ। अभी तक कुल 11 विश्व हिन्दी सम्मेलनों के माध्यम से हिन्दी को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया गया। सार्थक प्रयास को देखते हुए हाल ही में संयुक्तराष्ट्र संघ ने अपने रेडियो चैनल पर हिन्दी में समाचार प्रसारित करके हिन्दी को वैश्विक स्तर पर सम्मान दिया। अंग्रेजों के समय में व्यापार के बहाने हिन्दी भाषी लोगों को विश्व कई देशों में ले जाया गया। जहाँ आज एक बहुत बड़ा हिन्दी भाषी समाज स्थापित हो गया है। इन देशों में आज हिन्दी प्रवासी साहित्य लेखन किया जा रहा है। सूरीनाम, ग्याना, मॉरीशस, फिजी, त्रिनिदाद

और टोबैगो जैसे देशों में हिन्दी भाषा का प्रयोग जनसाधारण में लोक भाषा के रूप में किया जाता है।

किन्तु भूमंडलीकरण के प्रभाव को देखने योग्य एक दूसरा पक्ष भी है, जिस पर विचार करना आवश्यक है। भूमंडलीकरण का प्रभाव हिंदी भाषा पर व्यापक स्तर से पड़ रहा है। जिसके लक्षण समकालीन हिंदी साहित्य की लगभग प्रत्येक विधा में देखने को मिलते हैं। उपन्यासों में मन्नु भंडारी कृत 'आपका बंटी', ममता कालिया कृत 'दौड़', स्वयं प्रकाश कृत 'ईधन', अलका सरावगी कृत 'जानकीदास तेजपाल में शन' इत्यादि उपन्यासों में भूमंडलीकरण के प्रभाव से उत्पन्न समस्याओं को चित्रित किया गया है। भूमंडलीकरण से प्रभावित परिवेश शंकर पुणताम्बेकर कृत 'जंगल में', 'पराजय की जुबली', 'कटआउट', 'तेरहवां डिनर', 'गिद्ध' तथा 'मंडरा रहा है' जैसी कहानियां तथा प्रियंका ओम कृत कहानी संग्रह 'वो अजीब लड़की' भी भूमंडलीकरण के प्रभाव को भारतीय समाज पर दर्शाते हैं। इसी प्रकार कविता, नाटक, निबंध इत्यादि सभी विधाओं में लिखी गयी बहुत सी रचनाएँ भूमंडलीकरण के प्रभाव में निर्मित की गयीं हैं। पुष्पपाल सिंह इस सन्दर्भ में मानते हैं—“वैश्वीकरण की प्रक्रिया में पश्चिम के जो आर्थिक तथा सांस्कृतिक प्रभाव हम पर पड़े, वे मुख्यतः अमेरिका का प्रभाव ही है। वस्तुतः भूमंडलीकरण पूरी दुनिया, भूमंडल (ग्लोब) का अमेरिकीकरण ही है। हिंदी के सभी सजग उपन्यासकारों ने किसी-किसी रूप में, कभी विस्तार में जाकर तो कभी यथा अवसर कथा के क्रम में संक्षेप में भारत और भारतियों के इस अमेरिकीकरण पर विभिन्न रूपों में चिंता प्रकट कर अपना रचनात्मक आक्रोश प्रकट करते हैं।”⁹ “भारतेंदु से लेकर आधुनिक युग तक हर रचनाकार के मन में इस छटपटाहट को देखा जा सकता है। एक और 'निज भाषा' को उन्नति का मूल मंत्र मानने वाले भारतेंदु तो दूसरी ओर गणतंत्र बने इस देश का 'हर रचना' सभी ने इस देश की उन्नति के प्रयास किये और अवनति पर चिंता प्रकट की लेकिन एक बार पुनः धीरे-धीरे जिस प्रकार देश का मंडीकरण हो रहा है और उसमें हथियार के रूप में 'भाषा' और 'बाजार' को रखा जा रहा है, वह अपने आप में बैचैनी पैदा करने वाला विषय है।”¹⁰

समकालीन दौर में व्यापार केवल मनुष्य की जीवनोपयोगी वस्तुओं के आदान-प्रदान तक ही सीमित नहीं है। आज मनोरंजन के साधनों का भी व्यापार बड़े स्तर पर हो रहा है। हिन्दी फिल्मों की लोकप्रियता से सम्पूर्ण विश्व परिचित है। हिन्दी फिल्मों के चाहने वाले केवल भारत तक ही सीमित नहीं है। भारत के पड़ोसी देशों यथा— नेपाल, म्यांमार, पाकिस्तान, श्रीलंका, चीन, भूटान इत्यादि के साथ-साथ सम्पूर्ण एशिया सहित यूरोप, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और अफ्रीका महाद्वीप के अनेक देशों में भी हिन्दी फिल्मों को देखा जाता है। हालांकि इन देशों में हिन्दी फिल्मों को उनकी क्षेत्रीय भाषाओं में अनुदित करके देखा जाता है। किन्तु फिल्मों के नाम, पात्रों के नाम और गाने हिन्दी में रहने के कारण एक गैर हिन्दी भाषी समाज में भी हिन्दी की पहुँच बन रही है। यह बाजार का ही प्रभाव है कि हिंदी में आने वाले विज्ञापन हों या अखबार एवं अन्य समाचार माध्यमों में प्रसारित होने वाली

सूचनाएं, सभी पर भूमंडलीकरणका प्रभाव परिलक्षित होता है। उदाहरण स्वरूप विज्ञापनों में देखें—“Taste The ठंडा”, “ठंडा ठंडा Cool Cool”, “जो अंदर Fit है वह बाहर भी Fit है”। हिंदी सिनेमा तो कई दशकों पूर्व ही बाजारवाद से प्रभावितभाषा का केंद्र बन चुका है। हिंदी फिल्मों के गाने “First Time देखा तो हम खो गया, Second Time में Love हो गया...”, “One Two का Four, Four Two का One, My Name Is लखन...” इत्यादि प्रभाव को परिलक्षित करते हैं। वर्तमान समय में हिंदी सिनेमा में हिंदी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं का भी समावेश हो चुका है। “जब दो भाषाओं का मिश्रण होता है, तब अंततः उस भाषा की विजय होती है, जिसके पीछे आर्थिक ताकत अधिक होती है इसलिए मुझे लगता है कि विज्ञापनों में हमारी भाषाओं का कम और अंग्रेजी भाषा का विस्तार अधिक होता है।”¹¹

विश्व में सर्वाधिक पत्रों का प्रकाशन हिन्दी भाषा में ही होता है। भारत से हजारों की संख्या में राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय हिन्दी पत्र निकलते हैं। विश्व में विभिन्न संगठनों और संस्थाओं के प्रयास से हिन्दी पत्रकारिता फलफूल रही है। फिजी हिन्दी परिषद, भारत हित चिंतन सभा, हिन्दी पत्रकार संघ, आर्य समाज सभा, सरस्वती सांस्कृतिक सभा नवयुग उदय, त्रिदवा संस्था सहित अनेक प्रवासी संस्थाएं और अंतराष्ट्रीय भाषा अध्ययन केंद्रों के माध्यम से हिन्दी पत्रकारिता का संतोषजनक विकास हो रहा है। विश्व के अन्य देशों से भी हिन्दी पत्रों का प्रकाशन किया जाता है। ये भूमंडलीकरण का ही प्रभाव है कि गैर हिन्दी भाषी क्षेत्र में भी, हिन्दी भाषी लोग न सिर्फ हिन्दी में बात कर रहे हैं बल्कि हिन्दी के विकास का प्रयास भी कर रहे हैं।

इन्टरनेट भाषा का जबरदस्त संवाहक है। यह एक भाषा और एक विश्व का पक्षधर है। सांस्कृतिक वर्चस्व के साधनों की तरह संचार माध्यमों की नवप्रचारवादी छल योजना की जीवंत प्रक्रिया ने भूमंडलीय साम्राज्य के सूक्ष्म ढाँचे को नये आयाम दिये हैं। जिसमें इन्टरनेट की अहम भूमिका है। विश्व भर में सोशल साइट्स के उपयोग में भारतीयों की संख्या सर्वाधिक है। एक अनुमान के अनुसार फेसबुक और व्हाट्सएप पर अंग्रेजी के बाद द्वितीय भाषा के रूप हिन्दी का ही प्रयोग किया जाता है। वर्तमान समय में गूगल, याहू जैसे सर्व इंजन हिन्दी में भी अपार ज्ञान राशि संचित किए हुए हैं। जिसके माध्यम से विश्व के किसी भी देश में रह कर भी हिन्दी भाषा में जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

“अनुमान है कि विश्व में हर वर्ष लगभग 50 भाषाएँ विलुप्त हो रही हैं। धीरे-धीरे उनके बोलने वालों की संख्या कम हो रही है और उन भाषिक समुदायों की नई पीढ़ी बाजार में उपलब्ध अधिक सशक्त भाषाओं का उपयोग कर रही हैं। संचार क्रांति और वैश्वीकरण के चलते हिन्दी विलोपीकरण के संकट से मुक्त है।”¹² अंग्रेजी शिक्षाविद् लार्ड मैकाले ने कहा था “मैं भारत में ऐसे वर्ग का निर्माण कर दूंगा, जो रंग—रूप में तो भारतीय होंगे, लेकिन वह विचारधारा से अंग्रेज हो जायेंगे।”

मैकाले का कथन कुछ सन्दर्भों में चरितार्थ अवश्य हुआ है। किन्तु अंग्रेजी से आतंकित न होकर हिन्दी लगातार अपने क्षेत्र में विस्तार कर रही है।

वास्तविकता यह है कि भूमंडलीकरण के दौर में सम्पूर्ण विश्व में केवल व्यापार को बढ़ाने वाली भाषा की आवश्यकता है। भाषा की लोकप्रियता उसकी उदारता पर निर्भर करती है। भाषा जितनी उदार होती है, उसी के अनुरूप ही अन्य भाषाओं के समानांतर टिकपाती है। आवश्यकता के अनुसार उदार भाषा अपना स्वरूप नवनिर्मित करती है। हिन्दी भाषा में उदारता का गुण विद्यमान है। किसी भी अन्य भाषा के शब्द आत्मसात करने की क्षमता जितनी हिन्दी में है उतनी विश्व की किसी अन्य भाषा में शायद ही होगी। चूँकि भारतीय बाजार में प्राचीन काल से ही गैर हिन्दी भाषी लोगों का आना जाना रहा है इसलिए हिन्दी भाषा लगातार विश्व की अन्य भाषाओं के सम्पर्क में रही है। वर्तमान समय में भी हिन्दी आवश्यकतानुसार अंग्रेजी के शब्दों को भी अंगीकार कर रही है। सम्प्रेषण की सुविधा और वक्ता की सुलभता के अनुसार हिन्दी का स्वरूप स्वतः ढल जाता है। हिन्दी व अंग्रेजी का सम्बन्ध अब सह-अस्तित्व का है। हिन्दी का भविष्य केवल संगोष्ठियों और अकादमिक गतिविधियों पर निर्भर नहीं है। बल्कि उसकी निर्भरता खुले बाजार में मुक्त स्पर्धा पर आधारित है। पूर्णतः स्पष्ट हो गया है कि भूमंडलीकरण, ग्लोबलाइजेशन, वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद, बाजारवाद और उदारीकरण के दौर में भी हिन्दी भाषा में परिस्थितियों के अनुरूप ढलने की विशेष क्षमता है। चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी हिन्दी की ऐसी प्रगति इकबाल की अग्रलिखित पंक्तियों से साम्य स्थापित करती है—

यूनान मिश्र रोमां, सब मिट गये जहाँ से,
बाकी बचा हुआ है नाम ओ—निशां हमारा,
कुछ बात है की हस्ती, मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन, दौरे जमां हमारा।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः वैश्वीकरण के इस दौर में हिन्दी भाषा अपने मूल स्वरूप को कितना और किस प्रकार सुरक्षित रख पायेगी, यह एक विचारणीय प्रश्न है। जिस प्रकार हिन्दी वैश्विक स्तर पर लगातार विस्तार कर रही है, उसी के समानांतर विश्व की अन्य भाषाएँ (जिनमें अंग्रेजी प्रमुख है) हिन्दी क्षेत्र में संध लगाकर, हिन्दी के मूल स्वरूप को विकृत कर रही हैं। अंग्रेजी के बहुत से शब्द हिन्दी भाषी क्षेत्रों में इस प्रकार प्रयोग किये जाते हैं जैसे वह मूलतः हिन्दी के ही शब्द हों। हिन्दी के साथ अन्य भाषाओं के शब्दों का मिश्रित होना, हिन्दी भाषा के शब्द कोश को भरने का काम अवश्य करता है लेकिन हिन्दी भाषा के जिस शब्द के स्थान पर किसी अन्य भाषा का शब्द प्रयोग

होने लगता है, तब वह अन्य भाषा का शब्द हिन्दी भाषा के शब्द को उपेक्षित बना देता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, हिन्दी व्याकरण, उपकार प्रकाशन, आगरा, नवीनतम संस्करण पृ.सं. 38
2. दंगल झाल्टे, प्रयोजनमूलक हिन्दी: सिद्धांत और प्रयोग, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2011 ई. पृ. सं. 15
3. सुधीर रंजन सिंह, हिन्दी समुदाय और राष्ट्रवाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2019 ई. पृ.सं. 79
4. अनीता सचदेवा, वैश्वीकरण एवं हिन्दी का विकास, नेशनल प्रिंटर्स, नई दिल्ली, संस्करण 2017 ई. पृ.सं. 01
5. निशा नंदिनी भारतीय, जादू सकारात्मक सोच का (लेख संग्रह), वर्जिन साहित्यपीठ, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2018 ई. पृ.सं. 66
6. अनीता सचदेवा, वैश्वीकरण एवं हिन्दी का विकास, नेशनल प्रिंटर्स, नई दिल्ली, संस्करण 2017 ई. पृ.सं. 05
7. प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित, भूमंडलीयकृत विश्व के बीच भारत और भारतीय भाषाएँ (सं.) हर्षबाला शर्मा (सं.), इक्कीसवीं सदी : औपनिवेशिक मानसिकता और भाषा, अंतिका प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2011 ई. पृ.सं. 56
8. कमलेश कुमारी, भूमंडलीयकृत विश्व के बीच भारत और भारतीय भाषाएँ व उनका साहित्य (सं.) हर्षबाला शर्मा (सं.), इक्कीसवीं सदी : औपनिवेशिक मानसिकता और भाषा, अंतिका प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2011 ई. पृ.सं. 153
9. पुष्पपाल सिंह, भूमंडलीयकृत और हिन्दी उपन्यास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012 ई. पृ.सं. 141
10. हर्षबाला शर्मा(सं.), इक्कीसवीं सदी : औपनिवेशिक मानसिकता और भाषा, अंतिका प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2011 ई. पृ.सं. 105
11. रमेश उपाध्याय भाषा और भूमंडलीयकरण, शब्द संधान, दिल्ली, संस्करण 2008 ई. पृ.सं. 18
12. अनीता सचदेवा, वैश्वीकरण एवं हिन्दी का विकास, नेशनल प्रिंटर्स, नई दिल्ली, संस्करण 2017 ई. पृ.सं. 08